हिंदी भाषिक कौशल रोजगार

प्रा. डॉ. उत्तम थोरात.
हिंदी विभाग,
आदर्श कॉलेज, विटा
तहसिल खानापुर, जिला–सांगली

आधुनिक युग में हिंदी भाषा साहित्यिक या संप्रेशन के साथ भाषिक कौशल के कारण रोजगार का महत्वपूर्ण माध्यम बन रही है । हिंदी कामकाज, कार्यपद्धति, विज्ञान, तकनीक, विधी, चिकित्सा, प्रौद्योगिकी, वाणिज्य के साथ संगणक, इंटरनेट, सॅटेलाईट और सूचना की भाषा बनने लगी है। वह जनसंचार की भाषा बनकर भाषाई समता और भाषा व्यवहार को गति प्रदान कर रही है। संचार भाषा के सभी आवश्यक गुण हिंदी में होने के कारण वह आज विश्वभाषा बन रही है। वर्तमान युग में हिंदी भाषा का प्रचलन देहातों से लेकर शहरों और महानगरों में विस्तारित हुआ दिखाई देता है। मंदिरों से लेकर बँको तक, डाक से लेकर रेल तक, शेअर बाजार से लेकर प्रशासनिक कार्यालयों तक हिंदी भाषा संचारित हो रही है। अनेक छोटी–बडी पत्र–पत्रिकाएँ, दृश्य–श्राव्य माध्यमों के साथ विज्ञापन क्षेत्र में भी हिंदी का नया रूप साकार हो रहा है। प्रिंट मीडिया से लेकर इलेक्ट्रॉनिक मीडिया तक सभी क्षेत्रों के सहयोग से हिंदी भाषा विश्व के कोने–कोने तक पहुँच चुकी है।

उपभोक्ता संस्कृति का विस्तार होने के कारण संपूर्ण विश्व एक बाजार में परिवर्तीत हो रहा है। इस बाजार की महत्वपूर्ण आवश्यकता है–भाषा, जिसमें दुनिया के लोग एक दूसरे के साथ आदान–प्रदान कर सके। इस आवश्यकता को पूर्ण करने की चुनौती अब हिंदी भाषा के जिम्मे है। वास्तविकता यह है कि हिंदी अपनी विशेषताओं के कारण यह जिम्मेदारी पूर्ण कर विश्व के बाजार में अपना महत्वपूर्ण अस्तित्व बनाएँ रखेगी। हिंदी अपने विशेष साहित्यक भांडार के कारण विश्व के तमाम देशों को अपनी ओर आकर्षित करती रही है। हिंदी की

लोकप्रियता का अंदाज इस बात से लगाया जा सकता है कि ''लगभग 80 करोड आम जनों दवारा विश्व के 176 से अधिक विश्वविद्यालयों मे पढाई जानेवाली हिंदी आंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बना चुकी है। नये आकडों के अनुसार हिंदी के बोलने वाले विश्व में (पहले चिनी एवं अंग्रेजी) प्रथम स्थान पर हो गये है।''[1] भाषा उच्चारण और विशाल शब्दसंग्रह के कारण विश्व में हिंदी की लोकप्रियता दिन–ब–दिन बढती जा रहीं है।

भूमंडलीकरण के कारण हिंदी का प्रभाव व्यवसायिकता के कारण और भी विस्तारित होता जा रहा है। अब हिंदी बोलचाल और साहित्य के साथ ज्ञान विज्ञान और रोजगार की भाषा बन गई है। वैज्ञानिक और तकनीकी उपयोग ने हिंदी लाखों पर्यायवाची शब्दों का निर्माण करने के कारण विश्व में हिंदी के प्रयोग मार्ग प्रशस्त हो गए है। इसी कारण भारत से बाहर विश्व में रोजगार के अनेक अवसर खुल गए है। हिंदी भाषा अध्येता और हिंदी भाषा में उपाधि प्राप्त करनेवाला व्यक्ति लगन और मेहनत से भाषिक कौशल के आधार पर विश्व में कही भी रोजगार प्राप्त कर रहा है। हिंदी भाषा पर अधिकार प्राप्त करनेवाले हर एक व्यक्ति के लिए नौकरी और रोजगार के अवसर निर्माण हो रहे है। हिंदी भाषा अध्येता हिंदी भाषा से जुडे रोजगार तक पहुँचकर उसी के लिए और अन्य योजनाएँ प्राप्त कर हिंदी भाषिक कौशल्य के आधार पर रोजगार प्राप्त कर सकता है। वह हिंदी भाषिक कौशल के आधार पर निम्न क्षेत्रों मे रोजगार प्राप्त कर सकता है।

1) अध्यापक – हंदी भाषिक कौशल के आधार पर आवश्यक उपाधि प्राप्त करनेवाला व्यक्ति विश्व के किसी भी स्कुल और कॉलेजों में अध्यापक बन सकता है । आज देश के साथ विदेशों के छात्रों में भी हिंदी भाषा के प्रति आकर्षण बढ रहा है। परिणाम स्वरूप हिंदी अध्यापकों की आवश्यकता निर्माण हो रही है। इस आवश्यकता पुर्ति हेतु हमारी सरकार हिंदी अध्येता को उपाधि के साथ भाषिक कौशल की भी पूर्ति कर रही है। हमारे देश के किसी भी प्रांत में नौकरी करनी है तो आवश्यक उपाधि के साथ प्रांतीय और स्थानीय भाषा पर अधिकार होना आवश्यक है, साथ ही उस प्रदेश की संस्कृति–सभ्यता और हिंदी साहित्य से परिचित होना भी अनिवार्य है। हिंदी का समृदध ज्ञान प्राप्त व्यक्ति देश–विदेश में हिंदी अध्यापक की नौकरी प्राप्त कर सकता है।

2)**निवेदक** – हिंदी भाषाके अध्यता और भाषिक कौशल से युक्त व्यक्ति हिंदी निवेदक के रूप में कार्य कर सकता है। भारतीय समाज में मनोरंजन, सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक आदि अनेक क्षेत्रों में कुशल निवेदक की मांग है। हिंदी भाषा पर प्रभुत्व रखनेवाला, निवेदन शैली में निपुण, उच्चारण कौशल में निपुण, अभिनय कौशल का ज्ञाता, मंचीय साहसिकता, समयसूचकता, प्रसंगानुरूप हिंदी भाषा के साथ स्थानीय भाषा और बोली भाषा का ज्ञान रखनेवाला व्यक्ति एक अच्छा निवेदक बन सकता है। वर्तमान युग सोशल मीडिया का होने का कारण अनेक छोटे–छोटे न्यूज चॅनल शुरू हुए है। इस क्षेत्र में निवेदक मेहनताना के रूप में हजारों रूपए कमा रहे है।

3)दुभाशिया– भिन्न भाषा–भाषियों के विचारों को तुरंत एक–दूसरे तक पहुॅचाने का काम करनेवाला व्यक्ति दुभाषिया कहलाता है। सरकारी दूतावास, विश्वविद्यालय, पर्यटन स्थळ, होटल, व्यापार, कंपनियो, औद्योगिक प्रतिष्ठान, एवं विभिन्न कार्यालयों मे दुभाषिया के पद होते हैं। इस पद को प्राप्त करने के लिए भाषा कौशल इसमें बोलने की कलात्मकता, समयसूचकता, अधिग्रहण की क्षमता, तुरंत अनुवाद स्पष्ट उच्चारण, साहस और आशु अनुवाद में प्रवीणता आदि गुणों से युक्त व्यक्ति की आवश्यकता है। विदेशी नेता, अधिकारी, पर्यटक, अभिनेता, आदि की दृष्टि से दुभाषिया का महत्व अनन्य साधारण है। इसलिए हिंदी के साथ विश्व की प्रमुख भाषा का ज्ञान और भाषिक कौशल की आवश्यकता है

4)अधिकारी– हिंदी के अध्येता राष्ट्रीय बॅको में राजभाषा अधिकारी पद की नौकरी प्राप्त कर सकता है। साथ ही हिंदी भाषा के अधिनियम प्रावधान के अनुसार सभी संस्थानों में हिंदी अधिकारी के पद अवश्य होते है। देश–विदेश में सरकारी संस्थानों में हिंदी अधिकारी अथवा हिंदी सलाहकार के रूप में भी नौकरी मिल सकती है। हिंदी अधिकारी पद की नौकरी हासिल करने के लिए हिंदी उपाधि और उच्चतर शिक्षा इस शैक्षिक योग्यता के साथ भाषीक कौशल की आवश्यकता है। जिस प्रांत में नौकरी करनी है उस प्रांत की भाषा का भी ज्ञान होना आवश्यक है।

5)**विज्ञापन निर्माता**– हिंदी भाषा ने आज विश्व का मार्केट काबीज किया है। विदेशी उत्पादन को भारत में बेचना है तो भारत की मुख्य भाषा हिंदी में उस उत्पादन का विज्ञापन किया जाता है। विज्ञापन के जरिए उत्पाद की जानकारी ग्राहकों तक पहुॅचती है। विज्ञापन तैयार करने के लिए विज्ञापन निर्माता और विज्ञापन विशेषज्ञ की माँग बढती जा रही है। इस माँग की पुर्ति हिंदी भाषा पर अधिकार और हिंदी भाषा कौशल से युक्त व्यक्ति ही कर सकता है। प्रॉडक्ट की जानकारी ग्राहकों तक पहुंचाने के लिए भाषागत सौंदर्य, संक्षिप्त और आकर्षक वाक्य रचना, श्रव्य और बोधगम्य भाषा में विज्ञापन बनाया तो विज्ञापन निर्माता करोडों रूपये प्राप्त कर सकता है। ''ठंडा मतलब कोका कोला'' जैसे छोटे–छोटे, कम से कम शब्दों मे बनाए गए लोकप्रिय विज्ञापन के कारण विश्व में कोका कोला कंपनी का नाम हुआ। लोकप्रिय विज्ञान बनाने के लिए भाषिक कौशल का आधार लिया जाता है। भाषिक कौशल पर अधिकार प्राप्त करनेवाला व्यक्ति ही आकर्षक विज्ञापन बना सकता है।

6) संपादक या संवाददाता – अहिंदी प्रदेशों के साथ विदेशों मे हिंदी भाषा की पत्र–पत्रिकाएॅ अधिक मात्रा में निकल रही है। ''हिंदी पत्रकारिता के किसी भी क्षेत्र में जो भाषा

जनक विवशता या शब्दों की व्यूह रचना हो गई है उसका मुळ कारण है कि खबर को उत्पाद समझने की मानसिंकता। यही कारण है कि समाचार पत्रों की भाषा में बाजार में अधिकाधिक बिकनेवाली अभिव्यक्ति को महत्व मिल रहा है।''[2] ऐसी स्थिति में अच्छे संपादक और संवाददाता की आवश्यकता होती है। हिंदी भाषा में स्नातक और स्नानकोत्तर तक की उपाधि पाकर पत्रकारिता और भाषिक कौशल की प्रशिक्षा प्राप्त करके संपादक और संवाददाता की नौकरी प्राप्त की जा सकती है।

वर्तमान युग में जिनका हिंदी भाषा पर अधिकार है वह विश्व में किसी भी कोने में जाकर रोजगार प्राप्त कर सकता है। हिंदी भाषिक कौशल प्राप्त व्यक्ति रेडियो में संवाददाता, टेलीविजन के क्षेत्र में गीतकार, लेखक, संपादक, धारावाहिक स्क्रिप्ट लेखक आदि के साथ रिपोर्टर के रूप में भी नाम के साथ धन कमा सकता है। भाषिक कौशल निपुन व्यक्ति मीडिया, कानून, फीचर लेखन, रिपोर्ताज, कार्टुन आदि क्षेत्रों में जनसंपर्क अधिकारी के रूप में नौकरी प्राप्त कर सकता है। भारत के साथ विश्व के अन्य देशों मे हिंदी का प्रयोग बढने से रोजगार के अवसर निर्माण हो रहे है, आवश्यकता है भाषिक कौशल और प्रभुत्व की।

संदर्भ–

1) डॉ.वीरेंद्र सिंह यादव–राष्ट्रभाषा हिंदी विचार नीतियाँ और सुझाव
2)राष्ट्रवाणी–द्वैमासिकपत्रिका–डिसेंबर 2017–जनवरी 2018

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com